विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

भूपेन्द्र सिंह चौहान*

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य स्नातक स्तर (प्रथम वर्ष) पर अध्ययनरत विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना है। इसके लिए 500 छात्र–छात्राओं को प्रतिदर्श में शामिल किया गया है। डॉ० यशवीर सिंह, अवकाश प्राप्त विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग तथा डॉ० महेश भार्गव, चेयरमैन, हरप्रसाद इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियर स्टडीज, आगरा द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधि के अन्तर्गत मध्यमान, मध्यमानों का अन्तर, मानक विचलन, टी–मूल्य एवं सम्भावना मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

हर जीव अपने पर्यावरण से तालमेल एवं सामन्जस्य बनाने की कोशिश करता है, यह उसके निजी हित में तो होता ही है, अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों तथा पर्यावरणजन्य चुनौतियों से स्वाभाविक सम्बन्ध कायम करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। मनुष्य को इस पूरी सृष्टि का मुकुट या सिरमौर सम्भवतः उसकी अपने पर्यावरण से इस तालमेल बनाये रखने की क्षमता के कारण ही कहा जाता है। उसका पर्यावरण प्रायः तीन प्रकार का माना जा सकता है। प्रथम, भौतिक पर्यावरण जिससे तालमेल रखे बगैर वह जीवित नहीं रह सकता। द्वितीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण जिसमें वह अपने तथा दूसरों के बीच की दूरी को कम करता है। ''सर्वे भवन्तु सिखनः'' (सभी सुखी हों) का राग अलापता है तथा उसके बिना वह अपने आप में एक रिक्तता का अनुभव करता है। तृतीय, मनोवैज्ञानिक पर्यावरण जिससे वह अलग नहीं रह सकता और जो उसकी ''आन्तरिक दुनिया'' के रूप में उसे सोचने, कल्पना करने, उड़ान भरने तथा समय एवं स्थान की सीमाओं को तोड़कर एक दूर अपरिचित संदर्भ से रिश्ता जोड़ने से उसे कामयाबी दिलाता है। मनुष्य का अपने इस प्रकार के पर्यावरण से सम्बन्ध बनाये रखने, उसके साथ संतुलन बनाये रखने तथा उसकी चुनौतियों से कुशल एवं सफल समन्वय तथा समझौता की स्थिति तक पहुँचने की निरन्तर प्रक्रिया को ही समायोजन कहा जाता है। समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। समायोजित व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि उच्च कोटि की होती है तथा वह संवेगात्मक रूप से परिपक्व भी होता है।

किसी भी छात्र में जिस अनुपात में संवेगात्मक परिपक्वता होगी, उसी अनुपात में वह सभी क्षेत्रों में समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करेगा। शैक्षिक उपलब्धि का सीधा सम्बन्ध समायोजन तथा संवेगात्मक परिपक्वता से है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व बालक शैक्षिक क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त करता है तथा लक्ष्य से भटकता नहीं है। वह बालक जो संवेगात्मक रूप से परिपक्व नहीं होता है, वह शैक्षिक क्षेत्र में कम उपलब्धि प्राप्त कर पाता है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व बालक समाज की अवांछनीय गतिविधियों में भी लिप्त हो जाता है। कक्षा–कक्ष तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में वह मुख्य भूमिका का निर्वाह नहीं करता है।

ऐसी स्थिति में छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता को विकसित करना अति आवश्यक है। विद्यार्थियों में मौजूद ऊर्जा को जब सही दिशा प्राप्त होती है, तभी विद्यार्थियों और समाज में अनेक प्रकार की कलाओं का जन्म होता है। वर्तमान शिक्षा आदर्श, ज्ञान तथा मूल्यों की धरोहर न होकर केवल अर्थ संचय करने का एक माध्यम बनकर रह गई है। विद्यार्थियों तथा समाज के विकास के लिए धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की परम् आवश्यकता होती है। सम्पूर्ण विद्यार्थी समाज धर्म से रहित एवं काम के विषय जाल में उलझा हुआ है। यही स्थिति संवेगात्मक अपरिपक्वता अथवा कुसमायोजन है। विद्यार्थियों में न तो समायोजन ही विकसित हो रहा है और न ही संवेगात्मक परिपक्वता। विद्यार्थियों में चेतना लाने के लिए आवश्यक है कि समायोजन एवं संवेग को अधिक महत्व दिया जाये। जब छात्र संवेगात्मक रूप से परिपक्व एवं समायोजित होंगे तभी उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर पायेंगे।

*प्रवक्ता, श्री मेघ सिंह महाविद्यालय, आविदगढ़, आगरा

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की प्रक्रिया में नित्य आवश्यकताओं का अनुभव करता है और उन्हें पूरा करने का प्रयास करता है। जब कोई आवश्यकता उत्पन्न होती है तो वह संतुष्टि चाहती है, यदि आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तो व्यक्ति संतोष का अनुभव करता है और उसके सुसमायोजित व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह व्यक्ति संवेगात्मक दृष्टि से परिपक्व माना जाता है। इसके विपरीत यदि आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो व्यक्ति एक प्रकार के तनाव का अनुभव करता है। इस तनाव को दूर करने के लिए वह चिन्तित रहता है और उसमें समायोजन का अभाव हो जाता है। समायोजन के अभाव में व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। जीवन में सफलता का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अपने जीवन में जो व्यक्ति सफलता प्राप्त करता चला जाता है, इसका उसके व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में भी परीक्षा की सफलता बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विद्यार्थी जीवन में छात्र जितनी मेहनत करता है, उस सब महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विद्यार्थी जीवन में छात्र जिनती में मेहनत करता है, उस जब परिश्रम का फल परीक्षा में सफलता या शैक्षिक उपलब्धि के रूप में मिलता है यह सफलता विद्यार्थी के आने वाले जीवन को प्रभावित करती है। जो विद्यार्थी उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं उसके लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्थान होता है, वह अपनी कक्षा में उच्च स्थान पाता है, स्कूल में उसका मान बढ़ता है और वह अच्छे व्यवसाय में लग जाता है क्योंकि यह सफलता उसकी योग्यता का प्रमाण भी है। यह सफलता विद्यार्थी का मनोबल ऊँचा रखती है और वह उत्साह और रूचि के साथ जीवन में लग जाता है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का प्रमुख उद्देश्य विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना है। जिससे छात्र अपने वर्तमान को सुधारते हुए भावी जीवन के लिए एक दृढ़ एवं स्थायी आधार स्थापित कर सकें। सामान्यतः आज के विद्यार्थियों में स्वेचछाचारिता एवं अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। विद्यार्थी समाज तथा विद्यालय में अपने को समायोजित नहीं कर पा रहे हैं। इनमें दिशाहीनता की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। यह सभी क्रियाएँ संवेगात्मक अपरिपक्वता के कारण होती हैं। अतः छात्रों को संवेगात्मक परिपक्वता की शिक्षा देना अति आवश्यक है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व बालक उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करता है।

अभिभावकों को भी संवेगात्मक परिपक्वता तथा समायोजन के महत्व को समझना चाहिए तथा अपने पाल्यों को कुसमायोजन एवं संवेगों के प्रभावों से बचाना चाहिए।

समस्या कथन

''विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन''

प्रयुक्त–प्रत्ययों की व्याख्या

विज्ञान वर्ग–

इस वर्ग का सम्बन्ध ऐसे छात्रों से है जो जीव विज्ञान, गणित, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन करते हैं। इस वर्ग में प्रयोगात्मक क्रियाएँ जरूरी होती हैं।

कला वर्ग–

इस वर्ग का सम्बन्ध ऐसे छात्रों से है जो संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, नागरिकशास्त्र आदि विषयों का अध्ययन करते हैं।

वाणिज्य वर्ग–

इस वर्ग का सम्बन्ध ऐसे छात्रों से है जो व्यापार एवं अर्थ व्यवस्था से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करते हैं।

स्केचर एवं अन्य (1991) ने 102 बालकों पर जिनकी आयु 7–11 वर्ष के मध्य भी उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में अपना अध्ययन प्रस्तुत किया।

बुचानन एवं अन्य (1992) ने किशोरों एवं प्रौढ़ों पर हारमोन्स का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव से सम्बन्धित अध्ययन किया।

जैकी एवं अन्य (1992) ने प्रथम, तृतीय एवं छठीं कक्षाओं के बच्चों पर संवेगात्मक परिपक्वता का सम एवं विषम परिस्थितियों में अध्ययन किया

वान ओवर वाले एवं अन्य (1995) ने अहम शक्ति का संवेगात्मक प्रक्रियाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया।

सुनीता, हेन्गल, अमीना भावी तथा विजयलक्ष्मी ने कार्यरत और घरेलू माताओं के किशोरावस्था के बच्चों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया।

चिल्डर्स आर. पेरी एवं इतजाक माटूसिएक (2008) ने संवेगात्मक परिपक्वता एवं समायोजन में सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया।

उपर्युक्त अध्ययनों से ज्ञात होता है कि छात्रों में संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बन्धित विभिन्न कारकों जैसे–पारिवारिक पृष्ठभूमि, हारमोन्स, सम एवं विषम परिस्थितियाँ, अहम शक्ति, किशोरावस्था, समायोजन आदि से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययन हुए है, परन्तु अभी तक विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन नहीं हुआ है। अतः शोधार्थी ने संवेगात्मक परिपक्वता को अपने अध्यापन में लिया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर पर विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर कला और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. स्नातक स्तर पर विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. स्नातक स्तर पर विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. स्नातक स्तर पर कला और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। डॉ० यशवीर सिंह एवं डॉ० महेश भार्गव, द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है। छात्रों के उत्तरों के आधार पर अंकीकरण किया गया है तथा उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। प्राप्त परिणामों के आधार व्याख्या की गई है।

प्रतिदर्श का चयन

प्रस्तुत शोध के लिए आगरा जिले के चार शहरी एवं चार ग्रामीण महाविद्यालयों को लिया गया है। छात्रों की प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रविधि के द्वारा चयनित किया गया है। कुल 500 छात्रों 250 शहरी व 250 ग्रामीण को प्रतिदर्श में शामिल किया गया है।

प्रयुक्त परीक्षण

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी–डॉ० यशवीर सिंह एवं डॉ० महेश भार्गव।

यह मापनी पाँच संवेगात्मक कारकों का अध्ययन करती है–

1. संवेगात्मक स्थिरता
2. सांवेगिक प्रगति
3. सामाजिक समायोजन शीलता
4. व्यक्तित्व एकीकरण
5. अनाश्रित

सांख्यिकीय विश्लेषण

परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए मध्यमान, मध्यमान में अन्तर मानक विचलन, टी–मूल्य एवं सम्भावना मूल्य की सांख्यकीय विधियों द्वारा गणना की गयी है।

सांख्यकीय विश्लेषण के पश्चात शोध परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं स्पष्टीकरण किया गया है, जिससे वर्तमान में शोध अध्ययन के लिए निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं की तार्किकता को स्पष्ट किया जा सके एवं शोध–अध्ययन सम्बन्धी निष्कर्षों तक पहुँचा जा सके। संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के मध्यमान में अन्तर की सार्थकता के लिए तालिकाओं का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार है।

विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता परीक्षण तालिका।

तालिका सं.–1

Grp	No.	Mean	mean dif.	SD	DF	t-value	P-value	Level of Sinfi.
Sci	170	92.28		18.935				
			7.01		348	3.223	0.0014	0.01
Arts	180	85.27		21.573				

उपर्युक्त तालिका में विज्ञान वर्ग के छात्रों का मध्यमान 92.28 तथा मानक विचलन 18.935 है। कला वर्ग के छात्रों का मध्यमान 85.27 तथा मानक विचलन 21.573 है। दोनों वर्गों के मध्यमानों का अन्तर 7.01 है। टी–मूल्य 3.223, है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

विज्ञान और वाणिज्य वर्गों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता परीक्षण तालिका।

तालिका सं.–2

Grp	No.	Mean	mean dif.	SD	DF	t-value	P-value	Level of Sinfi.
Sci	170	92.28		18.935				
			16.57		318	5.773	0.0000	0.01
Com.	150	108.85		31.532				

उपर्युक्त तालिका में विज्ञान वर्ग के छात्रों का मध्यमान 92.28 तथा मानक विचलन 18.935 है। कला वर्ग के छात्रों का मध्यमान 108.85 तथा मानक विचलन 31.532 है। दोनों वर्गों के मध्यमानों का अन्तर 16.57 है। टी–मूल्य 5.773 एवं सम्भावना मूल्य 0.0000 है जो कि 0. 01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

विज्ञान और वाणिज्य वर्गों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता परीक्षण तालिका।

तालिका सं.–3

Grp	No.	Mean	mean dif.	SD	DF	t-value	P-value	Level of Sinfi.
Art	180	85.27		21.573				
			23.58		328	8.029	0.0000	0.01
Com.	150	108.85		31.532				

उपर्युक्त तालिका में कला वर्ग के छात्रों का मध्यमान 85.27 तथा मानक विचलन 21.573 है। वाणिज्य वर्ग के छात्रों का मध्यमान 108.85 तथा मानक विचलन 31.532 है। दोनों वर्गों के मध्यमान का अन्तर 23.58 है। टी–मूल्य 8.029 एवं सम्भावना मूल्य 0.0000 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्ष

1. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है। अतः हम परिणाम के आधार पर हम अपनी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते है।
2. विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है। अतः हम परिणाम के आधार पर हम अपनी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते है।
3. कला और वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है। अतः हम परिणाम के आधार पर हम अपनी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Fitcher R.P. (1944) Emotional Maladjustment and academic performance Journal Higher Education 15-43-44 Cited by super 1949 P.P. 511-512.

Kumari Sarita Mishra (2002) A comparative study of emotional development and social values, Ph.D Dr. B.R. Ambedkar University, Agra

गैरिट एच.ई. (1989) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी प्रकाशन नई दिल्ली।

Emotional Maturity Scale, National psychological Corporation 4/230, Kacheri Ghat Agra.

सिंह अरुण कुमार,(2003) आधुनिक लाभान्य मनोविज्ञान मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण

Kodhari C.R., Research Methodology, method's and Techniques, Second Addition New Age International Publishers.

डॉ० एस.पी. गुप्ता एवं उमा गुप्ता,(2003) ''सांख्यिकी के सिद्धान्त'' सुल्तान चन्द्र एण्ड सन्स प्रकाशन दिल्ली।